P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

ग्रामीण और शहरी छात्रों के समायोजन स्तर एवं व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन

दिलीप कुमार झा
प्रोफेसर,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
प्रज्ञा कॉलेज ऑफ एजुकेशन,
बहादुरगढ़, हरियाणा

सारांश

भारतीय समाज प्रारंभ से ही दो समुदायों में विभक्त रहा है, ग्रामीण समुदाय तथा नगरीय समुदाय। दोनों ही समुदायों के विशिष्ट वातावरण होते हैं जिसके साथ वहाँ के रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को समयोजित करता है। प्रत्येक व्यक्ति का समायोजन स्तर दूसरे से भिन्न होता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार वातावरण के साथ अपूर्व समायोजन करता है। समायोजन व्यक्तित्व गुणों द्वारा निर्धारित होता है और व्यक्तित्व गुणों का वंशानुक्रम के साथ–साथ वातावरण भी प्रभावित करता है। अतः वातावरण की भिन्नता के कारण ग्रामीण और शहरी वातावरण के छात्रों के समायोजन स्तर एवं उनके व्यक्तित्व गुणों में भिन्नता अवश्यम्भावी है।

मुख्य शब्द : समायोजन स्तर, व्यक्तित्व गुण, ग्रामीण और शहरी, छात्र–छात्राएँ।

प्रस्तावना

प्रत्येक व्यक्तियों का सामाजिक जीवन समुदाय, जिसमें वह निवास करता है प्रभावित होता है। मानव समुदायों का विभिन्न आधारों पर वर्गीकरण किया गया है। यह वर्गीकरण जनसंख्या के आकार एवं घनत्व पर आधारित होता है। समुदाय की भावना उनके व्यक्तित्व के अंतराल में अपना स्थान बना लेती है। ऐसी कोई मानव प्रजाति अथवा राष्ट्र का हमें ज्ञान नहीं हैं, जिसमें ग्रामीण समुदायों का युग न रहा हो। दूसरा समुदाय शहरी समुदाय होता है। शहरी समुदाय का आकार ग्रामीण समुदायों से बड़ा होता है। ग्रामों की अपेक्षा शहरों में जीवन यापन एवं सुख सुविधाएं अधिक होती हैं। इसीलिए व्यक्ति का व्यक्तित्व अवश्य प्रभावित होता है। व्यक्ति का व्यक्तित्व, वातावरण एवं वंशानुक्रम से प्रभावित होता है। अतः शहरी एवं ग्रामीण वातावरण का भी प्रभाव छात्र के ऊपर पड़ता है। यह प्रभाव छात्र के समायोजन स्तर पर भी पड़ता है। क्योंकि प्रत्येक बालक के समायोजन स्तर में अंतर होता है, और उस पर ग्रामीण और शहरी वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है।

समायोजन

समायोजन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति स्वयं और पर्यावरण के बीच अधिक सामंजस्य पूर्ण संबंध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन कर लेता है।

व्यक्तित्व गुण

व्यक्तित्व समस्त गुणों का गत्यात्मक संगठन होता है तथा प्रत्येक व्यक्ति में व्यक्तित्व के कुछ गुण अवश्य होते हैं। एक दूसरे से विशिष्ट प्रकार से संबंधित होकर व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं तथा दूसरे में भिन्नता प्रदान करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा डॉ0 एस0पी0 कुलश्रेष्ठ एवं डॉ0 आर0पी0 कोठियाल द्वारा निर्मित व्यक्तित्व विभा मापनी का प्रयोग किया गया है। जिसमें व्यक्तित्व के 12 गुणों का परीक्षण किया गया है।

पारिभाषिक शब्दावली

ग्रामीण छात्र

ग्रामीण क्षेत्र से तात्पर्य कम जनसंख्या वाले क्षेत्र के छात्र–छात्राओं से है।

शहरी छात्र

अधिक विस्तृत क्षेत्र में अधिक जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्र के छात्र हैं, एवं छात्राओं से है।

समायोजन

अपनी योग्यता के अनुसार परिस्थितियों से अनुकूलन करना ही समायोजन कहलाता है। प्रस्तुत अध्ययन में समायोजन से तात्पर्य डा0 बी0 के0 मित्तल द्वारा निर्मित समायोजन अन्वेषिका द्वारा प्राप्त प्राप्तांक से है।

व्यक्तित्व गुण

व्यक्तित्व के गुण व्यवहार करने की निश्चित विधियां है जो प्रत्येक व्यक्ति में बहुत कुछ स्थाई होती हैं। प्रस्तुत अध्ययन में व्यक्तित्व गुण से अभिप्राय डा0 एस0 पी0 कुलश्रेष्ठ एवं डॉ0 आर0 पी0 कोठियाल द्वारा निर्मित व्यक्तित्व विमा मापनी द्वारा प्राप्त प्राप्तांक से है।

शोध विषय की आवश्यकता

शिक्षा से आज औद्योगिकीकरण का विकास बढ़ता जा रहा है। विभिन्न क्षेत्रों में आज शिक्षा के प्रचार के साथ–साथ अनेक उद्योग भी स्थापित हो रहे हैं जो कि पूरे देश को एक सूत्र में बांधते हैं, परंतु फिर भी देश दो विभागों में विभक्त है – ग्राम एवं शहर।

ग्रामीण और शहरी सभ्यता, रहन–सहन, खान–पान में कुछ न कुछ अंतर अवश्य मिलता है। यही कारण है कि ग्रामीण छात्रों एवं शहरी छात्रों के व्यक्तित्व एवं समायोजन स्तर में अंतर अवश्य होता है। किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व पर उसके घर, परिवार, समाज, विद्यालय आदि का प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति जिस प्रकार के वातावरण में रहता है उसी प्रकार का उसका व्यक्तित्व होता है।

प्रस्तुत शोध द्वारा ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के व्यक्तित्व गुणों एवं समायोजन स्तर में अंतर जानने का प्रयास किया गया है। जैसा कि स्पष्ट है कि वातावरण का प्रभाव व्यक्ति पर अवश्य होता है तो ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के व्यक्तित्व में अंतर अवश्य होता है। इसका कारण है कि ग्रामों में शहरों की अपेक्षा आवास, शिक्षा, रोजगार आदि कि सुविधाएं कम होती हैं। ग्रामीण छात्रों को शहरी छात्रों की तुलना में उचित शिक्षा नहीं प्राप्त होती है। यदि प्राप्त होती भी है तो उन्हें उचित निर्देशन नहीं प्राप्त होता है। उचित निर्देशन के अभाव में वे अपने शिक्षा का उचित उपयोग नहीं कर पाते और शहरी छात्रों से पिछड़ जाते हैं। क्योंकि शहरों में उचित शिक्षा के साथ–साथ उचित निर्देशन की भी व्यवस्था होती है।

शिक्षा के साथ–साथ व्यक्तित्व पर माता–पिता उनकी शिक्षा, व्यवसाय आदि का भी प्रभाव पड़ता है। ग्रामीण छात्रों के रहन–सहन उनके माता–पिता की शिक्षा, व्यवसाय आदि शहरी छात्रों के रहन–सहन उनके माता–पिता की शिक्षा आदि से बिल्कुल भिन्न होता है। अतः ग्रामीण छात्रों के व्यक्तित्व गुणों में शहरी छात्रों से भिन्नता होती है।

अपने अध्ययन में शोधकर्ता ने व्यक्तित्व के 12 गुणों का अध्ययन किया है। प्रत्येक गुण पर वंशानुक्रम व वातावरण का प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के तौर पर व्यक्तित्व के प्रमुख गुण "Emotionally more Stable" पर वातावरण का प्रभाव पड़ता है। शहरों के एकाकी परिवार में बच्चों को माता–पिता का ही प्यार मिल पाता है। वह दादा–दादी, चाचा–चाची, नाना–नानी इत्यादि अन्य रिश्तेदारों के प्यार से वंचित होता है। जबकि गांव में संयुक्त परिवार होने से बच्चों को सभी का प्रेम मिलता है और वह संवेगात्मक रूप से अधिक स्थिर होता है। इसी प्रकार अन्य गुणों में भी शहरी छात्र एवं ग्रामीण छात्रों की तुलना की गई है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य इन गुणों की तुलना करना ही नहीं अपितु उन कारणों को भी खोजना है जिससे कि इन गुणों में अंतर पाया जाता है।

ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के व्यक्तित्व गुणों की भिन्नता के साथ–साथ उनके समायोजन स्तर में भी अंतर पाया जाता है। यह भी सत्य है कि प्रत्येक व्यक्ति समायोजन अपनी क्षमता के अनुसार ही करता है। परंतु उनके समायोजन स्तर पर पारिवारिक, सामाजिक एवं विद्यालय वातावरण का भी बहुत अधिक प्रभाव होता है। जैसे कि अगर परिवार में माता–पिता या अन्य कोई भी सदस्य बच्चों पर अधिक दबाव रखते हों, हर समय उन्हें टोकना, क्रोध करना इत्यादि हो तो बच्चों के लिए ऐसे वातावरण में समायोजन करना कठिन हो जाएगा। उनमें कुण्ठा, हीन भावना, शारीरिक विघटन, मानसिक अस्वास्थ्य, बालापराध आदि जैसे अनेकों दोष उत्पन्न हो जाते हैं और वह कुसमायोजन की स्थिति में पहुंच जाता है। छात्रों का यह कुसमायोजन उनके व्यक्तित्व गुणों को भी प्रभावित करता है। कुसमायोजित छात्र में बहिर्मुखी, रचनात्मकता, सक्रियता, मानसिक स्वास्थ्य, आदि गुण नहीं पाए जाते हैं क्योंकि असमायोजित छात्र सदैव हीनता, कुंठा आदि का शिकार रहता है। उसकी मानसिक योग्यता, विचार क्षमता आदि भी इससे प्रभावित होती हैं।

अतः शोधकर्ता ने अपना शोध का विषय छात्रों के समायोजन और उसके व्यक्तित्व गुणों का अध्ययन रखा है और यह समायोजन स्तर एवं व्यक्तित्व गुण शहरी छात्रों में ग्रामीण क्षेत्रों से कितने भिन्न हैं, इस समस्या का समाधान करने के लिए इस विषय का चयन किया गया है।

समस्या कथन

प्रस्तुत शोध का शीर्षक ''ग्रामीण और शहरी छात्रों के समायोजन स्तर एवं व्यक्तित्व गुणों का एक तुलनात्मक अध्ययन है''। जिसमें समायोजन से अभिप्राय डॉ0 वी0के0 मित्तल द्वारा निर्मित प्रश्नावली पर प्राप्त प्राप्तांक से है। व्यक्तित्व गुणों से तात्पर्य डॉ0 एस0पी0 कुलश्रेष्ठ एवं डॉ0 आर0पी0 कोठियाल, शिक्षा विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक द्वारा निर्मित प्रश्नावली पर प्राप्त प्राप्तांक से है। ग्रामीण एवं शहरी छात्रों से अभिप्राय ग्यारहवीं कक्षा में पढने वाले छात्र व छात्राओं से है।

शोध कार्य के उद्देश्य

प्रस्तुत शोधकार्य के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैः–

1. ग्रामीण और शहरी छात्रों के समायोजन स्तर की तुलना करना।
   - i. ग्रामीण और शहरी छात्रों के पारिवारिक समायोजन स्तर की तुलना करना।
   - ii. ग्रामीण और शहरी छात्रों के सामाजिक समायोजन स्तर की तुलना करना।
   - iii. ग्रामीण और शहरी छात्रों के स्वास्थ्य समायोजन स्तर की तुलना करना।
   - iv. ग्रामीण और शहरी छात्रों के विद्यालय समायोजन स्तर की तुलना करना।

2. ग्रामीण और शहरी छात्रों के व्यक्तित्व गुणों की तुलना करना।
   i. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'सांवेगिक रूप से कम स्थिर से अधिक स्थिर' व्यक्तित्व गुण की तुलना करना।
   ii. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'आज्ञाकारी से प्रभावशाली' व्यक्तित्व गुण की तुलना करना।
   iii. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'निष्क्रिय से सक्रिय' व्यक्तित्व गुण की तुलना करना।
   iv. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'कम बुद्धिमान से अधिक बुद्धिमान' व्यक्तित्व गुण की तुलना करना।
   v. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'अर्न्तमुखी से बहिर्मुखी' व्यक्तित्व गुण की तुलना करना।
   vi. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'तनावयुक्त और तनावरहित' व्यक्तित्व गुण की तुलना करना।
   vii. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'कम मानसिक स्वास्थ्य से अच्छे मानसिक स्वास्थ्य' व्यक्तित्व गुण की तुलना करना।
   viii. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'कुसमायोजन से अच्छे समायोजन' व्यक्तित्व गुण की तुलना करना।
   ix. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'असुरक्षित से सुरक्षित' व्यक्तित्व गुण की तुलना करना।
   x. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'अन्धविश्वासी से अन्धविश्वासी न होना' व्यक्तित्व गुण की तुलना करना।
   xi. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'कम रचनात्मक से अधिक रचनात्मक' व्यक्तित्व गुण की तुलना करना।
   xii. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'कम नैतिकता से अधिक नैतिकता' व्यक्तित्व गुण की तुलना करना।

शोध का सीमांकन

प्रस्तुत अध्ययन की जो सीमा निर्धारित की गई है वह निम्नलिखित है :–

1. सम्पूर्ण शहरी विद्यालयों के स्थान पर केवल गाजियाबाद के चार विद्यालयों को लिया गया है।
2. सम्पूर्ण ग्रामीण विद्यालयों के स्थान पर केवल गाजियाबाद के मोदीनगर तहसील के तीन गांवों के चार स्कूलों को लिया गया है।
3. सभी कक्षाओं के छात्रों के स्थान पर केवल ग्यारहवीं कक्षा के छात्रों व छात्राओं को लिया गया है।
4. न्यादर्श में केवल 400 छात्र–छात्राओं को लिया गया है।
5. स्वनिर्मित प्रश्नावली के स्थान पर डॉ0 एस0पी0 कुलश्रेष्ठ एवं डॉ0 आर0पी0 कोठियाल द्वारा निर्मित व्यक्तित्व विमा मापनी तथा डॉ0 वी0के0 मित्तल द्वारा निर्मित समायोजन अन्वेषिका का प्रयोग किया गया है ताकि अध्ययन में वैधता एवं विश्वसनीयता आ सके।

साहित्यावलोकन

पडेगांवकर तथा महेत (2011) ने माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के समायोजन एवं व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन किया जिसका उद्देश्य माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के समायोजन तथा व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन करना था, निष्कर्षतः पाया कि छात्र–छात्राओं के समायोजन, स्वसमायोजन तथा विद्यालय समायोजन में सार्थक अन्तर था जबकि शहरी एवं ग्रामीण छात्रों के व्यक्तित्व गुणों में भी सार्थक अन्तर पाया गया।

पूनम (2013) ने सहशिक्षा विद्यालयों एवं कन्या विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के समायोजन एवं व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि सहशिक्षा विद्यालयों एवं कन्या विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों में अन्तर नहीं होता है।

कश्यप सोनी (2016) ने ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की समायोजन एवं व्यक्तित्व का अध्ययन किया। तथा निष्कर्षतः पाया कि समायोजन पर आर्थिक एवं व्यावसायिक स्थिति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है और न ही वे विद्यालय के प्रकार को प्रभावित करते है तथा व्यक्ति जिस प्रकार के परिवेश में रहता है वैसा ही उसका समायोजन हो जाता है।

भारती एन0आर0 (2017) ने ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के किशोरों के व्यक्तित्व गुण एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन विषय में ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के लड़के और लड़कियों दोनों को सम्मिलित किया गया। अध्ययन के पश्चात् यह निष्कर्ष निकला कि ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा शहरी छात्रों के व्यक्तित्व गुण एवं समायोजन स्तर में अन्तर पाया जाता है।

परिकल्पना

1. ग्रामीण और शहरी छात्रों के समायोजन स्तर में कोई अन्तर नहीं होता है।

1.1. ग्रामीण और शहरी छात्रों के पारिवारिक समायोजन स्तर में कोई अन्तर नहीं होता है।

1.2. ग्रामीण और शहरी छात्रों के सामाजिक समायोजन में कोई अन्तर नहीं होता है।

1.3. ग्रामीण और शहरी छात्रों के स्वास्थ्य समायोजन में कोई अन्तर नहीं होता है।

1.4. ग्रामीण और शहरी छात्रों के विद्यालयीय समायोजन में कोई अन्तर नहीं होता है।

2. ग्रामीण और शहरी छात्रों के व्यक्तित्व गुणों में कोई अन्तर नहीं होता है।

2.1. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'सांवेगिक रूप से कम स्थिर से सांवेगिक रूप से अधिक स्थिर' व्यक्तित्व गुण में कोई अन्तर नहीं होता है।

2.2. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'आज्ञाकारिता से प्रभावशीलता' व्यक्तित्व गुण में कोई अन्तर नहीं होता है।

2.3. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'निष्क्रिय से सक्रिय' व्यक्तित्व गुण में कोई अन्तर नहीं होता है।

2.4. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'कम बुद्धिमान से अधिक बुद्धिमान' व्यक्तित्व गुण में कोई अन्तर नहीं होता है।

2.5. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'अन्तर्मुखी से बहिर्मुखी' व्यक्तित्व गुण में कोई अन्तर नहीं होता है।

2.6. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'तनावग्रस्त से तनाव रहित' व्यक्तित्व गुण में कोई अन्तर नहीं होता है।

2.7. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'कम मानसिक स्वास्थ्य से अधिक मानसिक स्वास्थ्य' व्यक्तित्व गुण में कोई अन्तर नहीं होता है।

2.8. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'कम समायोजन से अधिक समायोजन' व्यक्तित्व गुण में कोई अन्तर नहीं होता है।

2.9. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'असुरक्षित से सुरक्षित' व्यक्तित्व गुण में कोई अन्तर नहीं होता है।

2.10. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'अन्धविश्वासी से अन्धविश्वासी न होना' व्यक्तित्व गुण में कोई अन्तर नहीं होता है।

2.11. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'कम रचनात्मक से अधिक रचनात्मक' व्यक्तित्व गुण में कोई अन्तर नहीं होता है।

2.12. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'कम नैतिकता से अधिक नैतिकता' व्यक्तित्व गुण में कोई अन्तर नहीं होता है।

न्यादर्शचयन

प्रस्तुत अनुसंधान में स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श का प्रयोग किया गया है जिनको दो स्तरों पर विभाजित किया गया है। प्रथम स्तर पर शहरी विद्यालयों का गाजियाबाद के उच्चतम माध्यमिक बालक एवं बालिका विद्यालयों में से तथा ग्रामीण विद्यालयों का गाजियाबाद जिले के मोदीनगर में स्थित ग्रामों के राजकीय उच्चतम माध्यमिक बालक एवं बालिका विद्यालयों का चयन किया गया। दूसरे स्तर पर ग्यारहवीं कक्षा का चयन किया गया। विद्यालयों का चयन उस विद्यालय के परिणाम, स्थिति एवं छात्रों की संख्या के आधार पर किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत शोधकार्य में जिन उपकरणों का प्रयोग किया गया है वह निम्नलिखित हैः

1. डॉ0 वी0के0 मित्तल द्वारा निर्मित समायोजन अन्वेषिका।
2. डॉ0 एस0पी0 कुलश्रेष्ठ एवं आर0पी0 कोठियाल द्वारा निर्मित व्यक्तित्व विमा मापनी।

समायोजन अन्वेषिका (Adjustment Inventory)

इस अनुसंधान कार्य के लिए प्रथम अध्ययन छात्रों के समायोजन स्तर का किया गया है। इसके लिये डॉ0 वी0के0 मित्तल (एम0ए0पी0एच0डी0) द्वारा निर्मित समायोजन अन्वेषिका का प्रयोग किया गया। इस अन्वेषिका में कुल 80 प्रश्न है। इस अन्वेषिका के कुछ महत्वपूर्ण तत्व इस प्रकार हैं–

1. इस अन्वेषिका में 80 प्रश्न हैं।
2. प्रत्येक प्रश्न के तीन–तीन उत्तर है जो कि हाँ अनिश्चित (?) तथा नहीं में हैं।
3. किसी भी प्रश्न का कोई उत्तर सही या गलत नहीं है।
4. छात्रों को जो बात उन पर लागू होती है, उस पर गोल दायरा लगाना है।
5. इस अन्वेषिका के सभी प्रश्न समायोजन से सम्बन्धित है।
6. ये प्रश्न चार प्रकार के समायोजन स्तर से सम्बन्धित है :–

i. पारिवारिक समायोजन
ii. सामाजिक समायोजन
iii. स्वास्थ्य समायोजन
iv. विद्यालय समायोजन

व्यक्तित्व विमा मापनी (ISPT Personality Dimensional Test (PDT)

प्रस्तुत शोध में दूसरा अध्ययन छात्रों के व्यक्तित्व गुणों का किया गया है। इसके लिए डॉ0 एस0पी0 कुलश्रेष्ठ एवं आर0पी0 कोठियाल, शिक्षा विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक द्वारा निर्मित व्यक्तित्व विमा मापनी का प्रयोग किया गया है, जिसमें व्यक्तित्व गुणों से संबंधित कुल 120 कथन है। प्रत्येक प्रश्न पत्र कथन के माध्यम से दो क्रियाएं प्रस्तुत की गई है। इन दो कथनों में से छात्रों को निर्धारित स्थान पर एक कथन अंकित करना है। इस मापनी के कुछ महत्वपूर्ण तत्व इस प्रकार हैं–

1. इस मापनी के सभी प्रश्न कथन छात्रों के व्यक्तित्व गुणों से संबंधित है।
2. मापनी के प्रश्न कथनों को भली–भांति समझ कर किसी एक को अंकित करना है। वह प्रश्न छात्र के व्यक्तित्व का परिचायक है।
3. इन दो प्रश्न कथनों में कोई गलत या सही नहीं है। छात्रों को जो बात उस पर लागू होती है, उस पर निशान लगाना है।
4. यह व्यक्तित्व विमा मापनी 16+ आयु के छात्रों के व्यक्तित्व गुणों को मापने के लिए बनाई गई है।
5. व्यक्तित्व विमा मापनी में व्यक्तित्व के 12 गुणों पर (Dimension) कथन बनाए गए हैं।
6. प्रत्येक गुण (Dimension) से सम्बन्धित 10–10 कथन दिए गए हैं।
7. इन प्रश्न कथनों को अंकित करने के लिए 45 से 60 मिनट का समय दिया गया है।
8. सभी कथनों में से (Manual) के आधार पर उपयुक्त कथन का एक–एक अंक देकर गणना की गई है।

इस प्रकार इन दोनों मापनियों का प्रयोग आँकडे एकत्रित करने के लिये किया गया है।

आँकडें एकत्र करने की योजना

आंकड़ों का चयन अनुसंधानकर्ता ने विद्यालय की सामान्य परिस्थितियों में छात्र और छात्राओं से कक्षा संपर्क द्वारा किया है जिसमें उनको कक्षा में ही उपयुक्त निर्देश देने के पश्चात प्रश्नावली वितरित कर दी गई तथा सभी प्रश्नों के उत्तर दे देने के बाद उनसे पुनः वापस ले ली गई है। इस कार्य के लिए संबद्ध विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों से निवेदन कर अध्यापकों की सहायता से प्रश्नावली पूर्ण कराने का कार्य किया गया है।

आँकडें विश्लेषण की योजना

सभी विद्यालयों से आंकड़े एकत्रित करने के पश्चात आंकड़ों की गणना के लिए उन्हें एक बड़े कागज पर लिख लिया गया और आवश्यकतानुसार तालिका बना ली गई। अमान्य परिकल्पनाओं की जांच करने के लिए ग्रामीण और शहरी, दोनों क्षेत्रों के व्यक्तित्व गुणों और समायोजन स्तर के मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रांतिक निष्पत्ति की गणना करके ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की तुलना की गई है।

प्रस्तुत शोध प्रबंधन में जिन सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है, वे निम्नलिखित हैं:–

मध्यमान (MEAN)

$$\sum \frac{FX}{N}$$

मानक विचलन (STANDARD DEVIATION)

$$\text{S.D.} \sqrt{\sum \frac{Fd^2}{N} - \left(\sum \frac{Fd}{N}\right)^2 \quad x\, I}$$

विचलन की प्रामाणिक त्रुटि (S.E.O.)

$$\text{S.D.} \sqrt{\frac{Q1^2}{N1} + \frac{Q2^2}{N2}}$$

$$= \sqrt{\frac{01^2}{N} + \frac{02^2}{N2}}$$

क्रांतिक निष्पत्ति (C.R.)

$$C.R. = \frac{M1 - M2}{S.E.D.}$$

परिणाम एवं व्याख्या

ग्रामीण तथा शहरी छात्रों के समायोजन स्तर एवं व्यक्तित्व गुणों की तुलना करने के लिये सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया तथा जो परिणाम सामने आये वे निम्नलिखित है:–

1. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'पारिवारिक समायोजन' स्तर का मध्यमान 43.55 एवं 44.35 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति 1.55 है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
2. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'सामाजिक समायोजन' स्तर का मध्यमान 47.25 एवं 46.85 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति 0.57 है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
3. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'स्वास्थ्य समायोजन' स्तर का मध्यमान 46.35 एवं 45.1 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति 1.83 है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
4. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'विद्यालीय समायोजन' स्तर का मध्यमान 44.45 एवं 45.70 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति 1.98 है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
5. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'सांवेगिक स्थिरता' स्तर का मध्यमान 7.03 एवं 5.62 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति 5.87** है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है।
6. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'प्रभावशाली' व्यक्तित्व गुण का मध्यमान 3.46 एवं 3.98 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति 3.71 है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है।
7. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'सक्रियता' व्यक्तित्व गुण का मध्यमान 5.93 एवं 6.02 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति 5.29** है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है।
8. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'बुद्धि' व्यक्तित्व गुण का मध्यमान 6.34 एवं 6.11 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति 1.21 है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
9. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'अन्तर्मुखी से बहुर्मुखी' व्यक्तित्व गुण का मध्यमान 5.14 एवं 5.12 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति 0.11 है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
10. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'तनाव रहित' व्यक्तित्व गुण का मध्यमान 5.98 एवं 5.21 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति 3.20** है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है।
11. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'मानसिक स्वास्थ्य' व्यक्तित्व गुण का मध्यमान 7.54 एवं 6.86 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति 2.83** है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है।
12. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'समायोजन स्तर' व्यक्तित्व गुण का मध्यमान 6.79 एवं 6.64 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति 0.57 है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
13. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'सुरक्षा' व्यक्तित्व गुण का मध्यमान 8.17 एवं 8.09 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति 0.36 है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
14. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'अन्धविश्वासी से अन्धविश्वासी न होना' व्यक्तित्व गुण का मध्यमान 6. 62 एवं 6.74 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति 0.52 है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
15. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'रचनात्मकता' व्यक्तित्व गुण का मध्यमान 6.14 एवं 6.67 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति 2.65** है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है।
16. ग्रामीण और शहरी छात्रों के 'कम नैतिकता से अधिक नैतिकता' व्यक्तित्व गुण का मध्यमान 6.16 एवं 5.66 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति 5.87** है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोधकार्य से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित है:–

1. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के पारिवारिक समायोजन स्तर में कोई अन्तर नहीं होता है।
2. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के सामाजिक समायोजन स्तर में कोई अन्तर नहीं होता है।
3. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के स्वास्थ्य समायोजन स्तर में कोई अन्तर नहीं होता है।
4. शहरी छात्रों के विद्यालयीय समायोजन स्तर ग्रामीण क्षेत्रों से अधिक होता है।
5. ग्रामीण छात्रों का सांवेगिक स्थिरता शहरी क्षेत्रों की तुलना में अधिक होता है।
6. शहरी छात्रों में प्रभावशीलता का गुण अधिक पाया जाता है।
7. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की सक्रियाता में सार्थक अन्तर पाया गया है।
8. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की बुद्धि में कोई अन्तर नहीं पाया गया है।

9. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के 'अन्तर्मुखी से बहिर्मुखी' व्यक्तित्व गुण में कोई अन्तर नहीं होता है।
10. शहरी छात्रोंमें तनाव अधिक पाया गया है।
11. ग्रामीण छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शहरी छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर होता है।
12. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों का समायोजन स्तर समान होता है।
13. शहरी छात्रों में सुरक्षा की भावना कम होती है जबकि ग्रामीण छात्रों में यह भावना अधिक होती है।
14. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के 'अन्धविश्वासी न होना' व्यक्तित्व गुण में कोई अन्तर नहीं होता है।
15. ग्रामीण वातावरण का प्रभाव ग्रामीण छात्रों की रचनात्मकता पर भी पड़ता है।
16. ग्रामीण छात्र शहरी छात्रों की अपेक्षा अधिक नैतिक व धर्मिक होते हैं।

उपसंहार

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि समायोजन के विभिन्न क्षेत्रों में उपरोक्त कारणों से असमायोजन की स्थिति उत्पन्न होती है। यदि इन कारणों पर शुरू से ही ध्यान दिया जाय तो निश्चित तौर पर युवा पीढ़ी को एक हद तक असमायोजन की समस्या से बचाया जा सकता है और उन्हें समायोजित कर उनके व्यक्तित्व का सर्वोत्तम विकास किया जा सकता है। शिक्षा अमुल्य निधि है तथा बच्चों को शिक्षित करना प्रत्येक व्यक्ति का प्रमुख कर्तव्य है। यह तभी संभव होगा जब सभी अभिभावक अपनी मानसिकता बदलकर लड़के/लड़कियों के लिंग भेद को मिटाकर सबको शिक्षा प्रदान करने का संकल्प लें। इस प्रकार यह शोधकार्य संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति, समायोजन एवं व्यक्तित्व गुणों को विकसित करने में सहायक सिद्ध होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अस्थाना डॉ0 विपिन एवं अग्रवाल राम नारायण*
2. *मनोविज्ञान और शिक्षण में मापन एवं मूल्यांकन रांगेय राघव मार्ग, आगरा–2*
3. *तिवारी, गोविन्द, शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा संस्करण, 1979*
4. *पाठक पी.डी., शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, तेती सवं संस्करण, 1974*
5. *पाण्डेय डॉ. कामता प्रसाद, शैक्षिक अनुसंधान विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1988*
6. *पाल डॉ. हंसराज, प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान हिन्दी कार्यक्रम कार्यान्वयनं*
7. *अस्थाना डॉ0 विपिन एवं अग्रवाल राम नारायण, मनोविज्ञान और शिक्षण में मापन एवं मूल्यांकन रांगेय राघव मार्ग, आगरा–2*
8. *तिवारी, गोविन्द, शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा संस्करण, 1979*
9. *पाठक पी.डी., शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, तेती सवं संस्करण, 1974*
10. *पाण्डेय डॉ. कामता प्रसाद, शैक्षिक अनुसंधान विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1988*
11. *पाल डॉ. हंसराज, प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान हिन्दी कार्यक्रम कार्यान्वयनं निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2006*
12. *पाण्डेय के. पी., मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी अमिताश प्रकाशन, 1999*
13. *भाटिया हंसराज, शिक्षा मनोविज्ञान मण्डल पुस्तक भण्डर, काशी संस्करण, 1976*
14. *माथूर एस.एस., शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा संस्करण, 1997*
15. *सारस्वत डॉ. मालती, शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा आलोक प्रकाशन, लखनऊ, इलाहाबाद दशम संस्करण 2000*
16. *सरीन एवं सरीन, शैक्षिक अनुसंधान की विधियां नवीन संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 1999*
17. *सुखिया एस0 पी0, शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 1970*
18. *शर्मा आर. ए., शिक्षा अनुसंधान, सूर्या पब्लिकेशन नवीन संस्करण, 1998 लिस्ट 79, 94*
19. *शर्मा डॉ0 आर0 ए0, फण्डामेण्टल ऑफ एजुकेशन रिसर्च, लाल बुक डिपो, मेरठ संस्करण 1993*
20. *शर्मा आर. ए., शिक्षा अनुसंधान, सूर्या पब्लिकेशन नवीन संस्करण, 1998 लिस्ट 79, 94*
21. *शर्मा डॉ0 आर0 ए0, फण्डामेण्टल ऑफ एजुकेशन रिसर्च, लाल बुक डिपो, मेरठ संस्करण 1993*
22. *दवे श्रीमती इन्दु, शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर–4 संस्करण 1971*
23. *मंगल एस0 के0, शिक्षा मनोविज्ञान प्रकाश ब्रदर्स, लुधियाना संस्करण 1984*